P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्थापक डॉ0 केशवराव बलिराम हेडगेवार का योगदान

वाई0एन0 त्रिपाठी
विभागाध्यक्ष,
इतिहास विभाग,
आगरा कॉलेज, आगरा,
उत्तर प्रदेश, भारत

देवेन्द्र सिंह निरंजन
शोधार्थी,
इतिहास विभाग,
आगरा कॉलेज, आगरा,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन के अग्रणी पुरोधा एवं राष्ट्रीय स्वयं संघ के संस्थापक डॉ0 केशवराव बलिराम हेडगेवार जन्मजात सेनानी रहे। बाल्यकाल से लेकर जीवन की अन्तिम श्वांस तक देश की स्वतन्त्रता के लिए प्रयास करते रहे। 1910 में कलकत्ता के नेशनल मैडीकल कॉलेज में अध्ययन करते समय अनुशीलन समिति के सदस्य बने। कलकत्ता में पांच वर्षों तक चिकित्सा विज्ञान के अध्ययन के दौरान विभिन्न राष्ट्रवादी एवं क्रान्तिकारियों से सीधे सम्पर्क में आए। 1916 में उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण करके गांधी जी के आन्दोलन में भाग लेना प्रारम्भ किया। 26–30 दिसम्बर, 1920 को नागपुर के कांग्रेस के राष्ट्रीय अधिवेशन में पूर्ण स्वतन्त्रता का प्रस्ताव रखा। तदन्तर गांधी जी के असहयोग आन्दोलन में सक्रिया भाग लेने के कारण उन्हें 19 अगस्त 1921 को एक वर्ष के कारावास की सजा मिली। 12 जुलाई 1922 को जेल से बाहर आने के बाद उनकी सक्रियता और बढ़ गई। इसी वर्ष कांग्रेस ने मध्य प्रान्त की इकाई का प्रान्तीय सहमन्त्री बनाया। 12 फरवरी 1922 को असहयोग आन्दोलन को वापिस लेने के फलस्वरूप डा0 हेडगेवार ने एक ऐसा संगठन बनाने का निश्चय किया जो हिन्दुत्व की अवधारणा को जनमानस से जोड़े। 27 सितम्बर 1925 को नागपुर में राष्ट्रीय स्वयं संघ की उन्होंने स्थापना की। इस संगठन का उद्देश्य राष्ट्रीय स्वाधीनता था। 1928 में साइमन कमीशन के भारत आगमन के फलस्वरूप विरोध में उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई। 31 दिसम्बर, 1929 को कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में पूर्ण स्वतन्त्रता के लक्ष्य की घोषणा के साथ डॉ0 हेडगेवार की अभिलाषा को बल मिला। गांधी जी के 6 अप्रैल 1930 में प्रारम्भ किये गये नमक सत्याग्रह में भाग लेने के कारण उन्हें 9 माह के कारावास की सजा मिली। 15 दिसम्बर 1932 को ब्रिटिश सरकार ने संघ में सरकारी कर्मचारियों के प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगा दिया। 5 अगस्त 1940 को जीवन की अन्तिम श्वांस तक भावी राष्ट्र निर्माण तथा राष्ट्रीयता की भावना के लिए उनका जीवन समर्पित रहा।

मुख्य शब्द : अनुशीलन समिति, नेशनल मेडीकल कॉलेज, नागपुर, संघ, शाखायें, स्वयं सेवक।

प्रस्तावना

राष्ट्रीय स्वयं संघ के संस्थापक डॉ0 हेडगेवार महान राष्ट्र भक्त तथा प्रथम श्रेणी के क्रान्तिकारी थे। 1910 में नेशनल मेडीकल कॉलेज, कलकत्ता में चिकित्सा विज्ञान के विद्यार्थी से ही उनकी तत्कालीन राजनीतिक परिदृश्य में अभिरूचि पैदा हुई। बंगाल के क्रान्तिकारी दल युगान्तर तथा अनुशीलन समिति के सदस्य के रूप में वारीन्द्र घोष, श्री अरविन्द घोष तथा त्रैलोक्यनाथ चक्रवर्ती के सहयोगी बने। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की 1915 में प्राथमिक सदस्यता के बाद डॉ0 हेडगेवार राष्ट्रीय आन्दोलन की धारा में सक्रिय रूप में जुड़ गये। 26–30 दिसम्बर, 1920 नागपुर में कांग्रेस के राष्ट्रीय अधिवेशन में पूर्ण स्वतन्त्रता का प्रस्ताव रखा। यद्यपि गांधी जी ने इसे अस्वीकृत कर दिया। तदन्तर 1921 में गांधी जी के असहयोग आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। महात्मा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस ने देशव्यापी आन्दोलन चलाया। इसी क्रम में युवा डॉ0 हेडगेवार ने अपने कुछ कांग्रेसी मित्रों को साथ लेकर ''नागपुर नेशनल यूनियन'' की स्थापना की। इस संस्था ने पूर्ण स्वतंत्रता की मांग करते हुए सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का प्रचार प्रसार युद्धस्तर पर प्रारम्भ कर दिया। इसी समय मध्य प्रान्त की कांग्रेस

समिति द्वारा एक हिन्दू साप्ताहिक पत्र 'संकल्प' प्रारम्भ करके डॉ0 हेडगेवार को उसका संरक्षक नियुक्त कर दिया गया।

शोध पत्र का उद्देश्य

1. राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्थापक डॉ0 हेडगेवार के जीवन तथा कार्यों का अध्ययन करना।
2. डॉ0 हेडगेवार द्वारा भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने तथा योगदान का क्रमबद्ध अध्ययन करना।
3. डॉ0 हेडगेवार द्वारा स्थापित राष्ट्रीय स्वयं संघ की स्थापना तथा उद्देश्यों का अध्ययन करना।
4. डॉ0 हेडगेवार का एक सेनानी के रूप में मूल्यांकन करना।

साहित्यावलोकन

1. सहगल, नरेन्द्र (2019) डॉ0 हेडगेवार संघ और स्वतन्त्रता संग्राम, सुरूचि प्रकाशन, दिल्ली। यह पुस्तक स्वतन्त्रता आन्दोलन में डॉ0 हेडगेवार की भूमिका का परिचय देती है। पुस्तक में विस्तृत रूप में डॉ0 हेडगेवार के विद्यार्थी जीवन से लेकर अन्त तक की घटनाओं को प्रस्तुत किया गया है। कलकत्ता में चिकित्सा विज्ञान की शिक्षा, तदन्तर कांग्रेस सदस्यता, असहयोग आन्दोलन में भाग, जेल यात्रा, 1925 में संघ की स्थापना तथा नमक सत्याग्रह में कारावास से लेकर 1940 में उनके देहान्त तक विवरण दिया गया है। पुस्तक में स्रोतों का सन्दर्भ नहीं दिया गया है।
2. गौतम, सिद्धार्थ शंकर (2016), संघ राष्ट्र भावना का जाग्रत प्रहरी, सुरूचि प्रकाशन, दिल्ली। राष्ट्रीय स्वयं संघ की 1925 में स्थापना से लेकर वर्तमान तक के कालखण्ड में संघ के योगदान को प्रस्तुत किया गया है। लेखक ने संघ की स्थापना, उद्देश्य तथा विभिन्न कार्यक्रमों को संक्षेप में प्रस्तुत किया है।
3. मोहनराव भागवत (2018) संकलित, राष्ट्र निर्माण में युवाओं का योगदान, सुरूचि प्रकाशन, दिल्ली। 4 जनवरी 2009 को सर संघ चालक मोहन भागवत के व्याख्यान को सम्पादित कर प्रकाशित किया गया है। इस प्रकाशन में राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका उल्लेख किया गया है। डॉ0 हेडगेवार के विचारों को प्रस्तुत करके समन्वित प्रस्तुतीकरण किया गया है।
4. कानिटकर, उत्तम राव (2019) संघ–संस्कारों का बलस्थान, सुरूचि प्रकाशन, दिल्ली। संघ के उद्देश्य, कार्यों तथा योगदान पर विस्तृत लेखन किया गया है। संघ में ध्वज स्थापना प्रार्थना, प्रतिज्ञा, सामूहिकता जैसे सन्दर्भों को प्रस्तुत किया गया है। संघ की स्थापना के उद्देश्य को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करके वर्तमान में संघ की कार्य शैली से जोड़ा गया है।
5. पटले, जागेश्वर (2019), श्री गुरूजी परिचय एवं व्यक्तित्व, सुरूचि प्रकाशन दिल्ली। संघ के सरसंघ चालक रहे डॉ0 गोलवरकर के जीवन तथा कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है। डॉ0 हेडगोवार से उनके सम्पर्क तथा तदन्तर संघ के कार्यों का भी विवरण दिया गया है।
6. बर्थवाल, हरिश्चन्द्र (2019), राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, एक परिचय, सुरूचि प्रकाशन, दिल्ली। डॉ0 हेडगेवार के जीवन तथा आदर्शों के साथ राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का एक परिचय दिया गया है। संघ की कार्य पद्धति पर लेखन किया गया है।

विषय विस्तार

1919 में नागपुर में रहते हुए डॉ0 हेडगेवार ने विद्यार्थियों की सभाओं में देशभक्ति पूर्ण भाषण देने शुरू कर दिये। जब अनेक युवा कुछ करने के लिए तैयार हो गए, उनके इस उत्साह को दिशा देने के लिए डॉ0 हेडगेवार ने एक और संस्था ''राष्ट्रीय उत्सव मंडल'' का गठन किया। वे स्वयं कई वर्षों तक उसके महामंत्री की जिम्मेदारी निभाते रहे। इस संस्था के अनेक विधि कार्यक्रमों में छात्रों को हिन्दू धर्म, राष्ट्रीय संस्कृति, स्वतंत्रता का महत्व तथा ब्रिटिश सरकार के द्वारा हिन्दुओं के अस्तित्व को ही मिटा देने के षड़यन्त्र की जानकारी दी जाती थी। मध्य प्रान्त के गणमान्य नेता डॉ. मुंजे, लोकमान्य अणे, शरद पेंडसे के भाषण इस संस्था की सभाओं में होने लगे। विभिन्न भाषा तथा मजहबों से जुड़े युवा लोग भारत की आराधना करने लगे और देखते ही देखते एक शक्तिशाली संगठन का स्वरूप सामने आना प्रारम्भ ही गया।

इसी दौरान 1920 में होने वाले कांग्रेस के अधिवेशन को नागपुर में करने का निश्चय हुआ। उसे सफल बनाने के लिए तैयारियाँ प्रारम्भ हो गई। इस हेतु कांग्रेस के एक वरिष्ठ नेता डॉ0 परांजये ने डॉ0 हेडगेवार की सहायता से जनवरी 1920 में 'भारत सेवक मण्डल' की स्थापना की। सार्वजनिक गतिविधियों को सुचारू ढंग से चलाने के लिए और सेवाभावी युवकों को वालंटियर बनाने के लिए गठित हुए इस 'भारत सेवक मंडल' के प्रमुख की जिम्मेदारी डॉ0 हेडगेवार को दी गई। उन्हीं के प्रयासों के फलस्वरूप इस मण्डल में एक हजार से अधिक युवकों की भर्ती हो गई। इसी बीच अधिवेशन के प्रचार प्रसार के लिए जन समितियों का गठन किया गया। उनमें स्वागत समिति में डॉ0 हेडगेवार को प्रमुख स्थान दिया गया।

दिनांक 26 दिसम्बर, 1920 को कांग्रेस का नागपुर अधिवेशन शुरू हुआ। इससे पूर्व डॉ0 हेडगेवार और उनके कांग्रेसी मित्रों ने एक प्रस्ताव ''पूर्ण स्वतंत्रता ही हमारा उद्देश्य है'' तैयारकरके गांधी जी के समक्ष रखा। परन्तु गांधी जी ने विनम्र भाव से इतना ही कहा कि ''स्वराज्य में पूर्ण स्वतंत्रता का समावेश हो जाता है'' और प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में डॉ0 हेडगेवार की भागीदारी से उनके चरित्र की दृढ़ता, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रति अटल निष्ठा, पूर्ण स्वतंत्रता के लिए सभी मार्गों का औचित्य और अपने प्रिय नेताओं की अप्रिय बातों का भी डटकर विरोध करने का साहस इत्यादि से उनके सम्पूर्ण राष्ट्रवादी व्यक्तित्व का सहज आभास हो जाता है। कांग्रेस के साथ अनेक मुद्दों पर विचार भिन्नता होते हुए भी डॉ0 हेडगेवार ने कांग्रेस के अंदर एक आदर्श कार्यकर्ता के रूप में अपना स्थान बना लिया था।

नागपुर में सम्पन्न कांग्रेस अधिवेशन से पूर्व मध्य भारत की प्रान्तीय कांग्रेस समिति ने 'असहयोग मंडल' नाम से एक दल तैयार कर लिया था। डॉ0 हेडगेवार को इस मंडल में एक सक्रिय भूमिका के लिए नियुक्त किया गया। इनको जनसभाओं के आयोजन का प्रमुख कार्य सौंपा गया।

31 दिसंबर 1929 को लौहार में कांग्रेस ने प्रथम बार पूर्ण स्वाधीनता को अपना लक्ष्य घोषित किया और 26 जनवरी 1930 देश भर में स्वतंत्रता दिवस के रूप में मानने का निश्चय किया गया।

6 अप्रैल 1930 को दांडी में समुद्रतट पर गाँधी जी ने नमक कानून तोड़ा और लगभग 8 वर्ष बाद कांग्रेस ने दूसरा जनान्दोलन प्रारम्भ किया। संघ का कार्य अभी मध्यभारत प्रान्त में प्रभावी हो गया था। यहाँ नमक कानून के स्थान पर जंगल कानून तोड़कर सत्याग्रह करने का निश्चय हुआ।

14 जुलाई 1930 का सत्याग्रह हेतु यवतमाल जाते समय पुसद नामक स्थान पर आयोजित जनसभा में डॉ. हेडगेवार के सम्बोधन में स्वतंत्रता संग्राम में संघ का दृष्टिकोण स्पष्ट होता है। उन्होंने कहा–''स्वतंत्रता के लिए अंग्रेजों के बूट की पालिश करने से लेकर, उनके बूट को पैर से निकाल कर उससे उनके ही सिर को लहूलुहान करने तक के सब मार्ग मेरे स्वतंत्रता प्राप्ति के साधन हो सकते हैं। मैं तो इतना ही जानता हूँ कि देश को स्वतंत्र कराना है।''

डॉ. हेडगोवर के साथ गए सत्याग्रह जत्थे में अप्पा जी जोशी (बाद में सरकार्यवाह) दादाराव परमार्थ (बाद में मद्रास में प्रथम प्रान्त प्रचारक) आदि प्रमुख 12 स्वयंसेवक थे। उनको 9 मास का सश्रम कारावास दिया गया।

23 दिसम्बर 1934 को महात्मा जी संघ के शिविर में आए। सभी स्वयंसेवकों ने अनुशासनपूर्वक उनकी मान वंदना की। महात्मा जी के साथ श्री महादेव भाई देसाई, मीराबेन तथा आश्रम के अन्य व्यक्ति भी थे। उस भव्य दृश्य को देखकर महात्मा जी ने अप्पाजी जोशी के कंधे पर हाथ रखकर कहा ''मैं सचमुच प्रसन्न हूँ, सम्पूर्ण देश में इतना प्रभावी दृश्य अभी तक मैंने नहीं देखा।'' इसके बाद गांधी जी ने पाकशाला का निरीक्षण किया। उन्हें यह जानकर आश्चर्य हुआ कि 1,500 स्वंयसेवकों का भोजन 1 घंटे में बिना किसी गड़बड़ के तैयार हो जाता है, 1 रूपया तथा थोड़े से अनाज में दो समय का भोजन दिया जाता है और घाटा हुआ तो स्वयंसेवक ही उसे पूरा कर देते हैं।

इसके उपरांत उन्होंने रूग्णालय तथा स्वयंसेवकों के निवास भी देखे। रूग्णालय में रोगियों के हालचाल पूछते हुए उन्हें यह भी पता चला कि संघ में गाँव के किसान तथा मजदूर वर्ग के स्वयंसेवक भी हैं। ब्राह्मण, म्हार, मराठा आदि सभी जातियों के स्वयंसेवक एक साथ घुलमिल कर रहते हैं और एक ही पंक्ति में भोजन करते हैं। यह जानकर उन्होंने तथ्यों की जाँच पड़ताल करने के उददेश्य ये कुछ स्वंयसेवको से प्रश्न भी किए। स्वंयसेवकों के उत्तर में उन्हें यही मिला कि ''ब्राह्मण, मराठा, दर्जी आदि भेद हम संघ में नहीं मानते, अपने पड़ोस में किस जाति का स्वयंसेवक है, इसका हमें पता भी नहीं चलता तथा यह जानने की स्वयंसेवक है, इसका हमें पता भी नहीं चलता तथा यह जानने की हमारी इच्छा भी नहीं होती। हम सब हिन्दू हैं और इसीलिए भाई हैं। परिणामस्वरूप व्यवहार में ऊँच–नीच मानने की कल्पना ही हमें समझ में नहीं आती।''

इस पर महात्मा जी ने अप्पाजी जोशी से प्रश्न किया, ''आपने जाति भेद की भावना कैसे मिटा दी? इसके लिए हम लोग तथा अन्य कई संस्थाएँ जी–जान से प्रयत्न कर रहे हैं परन्तु लोग भेदभाव नहीं भूलते, आप तो जानते ही हैं कि अस्पृश्यता नष्ट करना कितना कठिन है, यह होते हुए भी आपने संघ में इस कठिन कार्य को कैसे सिद्ध कर लिया?'' इस पर अप्पाजी जोशी का उत्तर था–''सब हिन्दुओं में भाई–भाई का राष्ट्रीय आन्दोलन में डॉ0 हेडगेवार निरन्तर भाग लेते रहे। तत्कालीन कांग्रेसी नेताओं जैसे सुभाष चन्द्र बोस 19 जून 1940 की उनसे सम्पर्क करने आए।

डॉ0 हेडगेवार का स्वास्थ्य भी गिरता जा रहा था। 21 जून, 1940 को उन्होंने अन्तिम श्वांस तक राष्ट्रीय आन्दोलन में पूर्ण स्वतन्त्रता के साथ–साथ भारत में सांस्कृतिक पुर्नत्थान को दिशा प्रदान की।

निष्कर्ष

डॉ0 हेडगेवार का सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र की स्वतन्त्रता तथा राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया को समर्पित रहा। राष्ट्रीय आन्दोलन में अहयोग से लेकर सविनय अवज्ञा तक उन्होंने सक्रिय भाग लिया तथा जेल यात्रायें की। 1925 में समाज में राष्ट्र भक्ति तथा सांस्कृतिक चेतना के उद्देश्य से राष्ट्रीय स्वयं संघ की स्थापना की। स्वतन्त्रता स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी युग निर्माता, सांस्कृतिक तथा हिन्दुत्व की भावना की स्थापना के पुरोधा का व्यक्तित्व तथा कृतित्व सदैव प्रेरणा का स्रोत रहेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *गोलवरकर, माधव राव सदाशिव राव, विचार नवनीत, 2018, ज्ञान गंगा प्रकाशन, जयपुर।*
2. *रोषाद्रि, हो0वे0, कृतिरूप संघ दर्शन, 2018, रूचि प्रकाशन, दिल्ली।*
3. *विनोबा, कार्यकर्ता पाथेय, 2015, सर्व सेवा संघ, प्रकाशन, वाराणसी।*
4. *भागवत, मोहनराव, 2018, भविष्य का भारत, विमर्श प्रकाशन, नई दिल्ली।*
5. *सहगल, नरेन्द्र (2019) डॉ0 हेडगेवार संघ और स्वतन्त्रता संग्राम, सुरूचि प्रकाशन, दिल्ली।*
6. *गौतम, सिद्धार्थ शंकर (2016), संघ राष्ट्र भावना का जाग्रत प्रहरी, सुरूचि प्रकाशन, दिल्ली।*